uestion paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No...............**

**E**

**Sr. No. of Question Paper : 3746**

Unique Paper Code : 12057608

Name of the Paper : Hindi Ki Bhashik Vividhtayen (DSE)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे — पूर्णांक : 75

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. वाचिक हिन्दी के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

**अथवा**

आधुनिक साहित्यिक हिंदी की भाषिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित कबीर के पदों में वर्णित रहस्य-भावना पर प्रकाश डालिए। (15)

P.T.O.

अथवा

अमीर खुसरो की मुकरियों की काव्यगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

3. बनारसीदास की आत्मकथा 'अर्धकथानक' का महत्व लिखिए। (15)

अथवा

गालिब की गजलों का सार लिखिए।

4. 'रानी केतकी की कहानी' की संवेदना और शिल्प पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'पंचलैट' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित उद्धरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हुआ तुझ इश्क सूं ऐ आतिशीं रू दिल मिरा पानी, (8)
कि ज्यूं गलता है आतिश सूं गुलाब आहिस्ता-आहिस्ता
अदा-ओ-नाज सूं आता है वो रौशन जबीं घर सूं,
कि ज्यूं मश्रिक सूं निकले आफताब आहिस्ता-आहिस्ता

अथवा

मेहरबां होके बुला लो मुझे चाहो जिस वक़्त
मैं गया वक्त नहीं हूं कि फिर आ भी न सकूं,
जोफ़ में ताना-ए-अग़यार का शिकवा क्या है
बात कुछ सर तो नहीं है कि उठा भी न सकूं
जहर मिलता ही नहीं मुझको सितमगर, वर्ना
क्या क़सम है तेरे मिलने की कि खा भी न सकूं।

(ख) यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आयी थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नहीं। अब पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है। कीर्तनिया लोग ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है। गांव वालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत है न, भाई रे, गाय लूं? तो दूहे कौन?----- लो मजा ! अब इस कल-कब्जे वाली चीज को कौने बाले।

यह बात नहीं कि गांव भर में कोई पंचलैट बालने वाला नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है।उसके जलानेवाले जानकार हैं। लेकिन सवात्र है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिन्दगी भर ताना कौन सहे।

(7)

अथवा

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहां जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवाले को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पांव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें, जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियां खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूं उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है- जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है।